दिनांक 3 नवम्बर, 1979 को
हासन, कर्नाटक की सभा में
प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण।

———————————————————

भाइयों, बहनों और बेटियों,

आज मुझको बहुत प्रसन्नता है आपके इस इलाके में आने पर।

(दुभाषिये द्वारा स्थानीय भाषा में अनुवाद)

(हंसी के साथ श्री चरण सिंह) जरा लम्बे सेन्टेन्स कहूं––

पुराने जमाने में हमारा देश एक बहुत गौरवशाली देश था। संयुक्त दृष्टि से शक्तिशाली था और आर्थिक दृष्टि से समृद्धिशाली था। यहां से संसार में बहुत प्रकाश फैला था। दूसरे देशों के लोग हमारे पूर्वजों के कदमों में बैठकर विद्या सीखने के लिए आते थे।

मेरी पीढ़ी के लोग जब अंग्रेजों से महात्मा गांधी के नेतृत्व में जूझ रहे थे, तो हम तरह–तरह के स्वप्न अपने देश के लिए देखा करते थे। हमारे अरमान ये थे कि देश को आजाद होते ही फौरन हम इसको फिर उन्नत बना देंगे, और हर अर्थ में, हर मायने में हम इसको हिमालय की चोटी पर आसीन कर देंगे। जब अंग्रेजों का हिटलर से युद्ध चल रहा था और इटली हार गया, तो अंग्रेजों की तरफ से फौज ने, उनकी फौज ने इटली पर कब्जा किया। ब्रिटिश लोगों की फौज में हिन्दुस्तान सिपाही भी थे। उन्होंने वापिस आकर हमको 47–48 में ये बतलाया था– शहर के किसी भी घर में जाते, किसी भी गांव में जाते, तो उन्होंने सब जगह महात्मा गांधी के फोटो को लगा हुआ देखा। तो, दुनिया ये समझती थी कि गुलामी के जमाने में जिस देश ने महात्मा गांधी जैसा आदमी पैदा किया है, तो वो आजाद होने पर दुनिया को फिर कोई नया सन्देश देगा। परन्तु दोस्तों, अब अफसोस के साथ अब यह मानना पड़ता है कि हमारे सारे स्वप्न भंग हो गए, हमारे सारे अरमान खत्म हो गए।

आज हमारा देश लगभग सभी देशों से ज्यादा गरीब है। दुनिया में 125 देश हैं जिनकी आबादी 10 लाख से ज्यादा है, उनमें हमारा नम्बर 11वां है। अर्थ ये हुआ कि 110 देश हमसे मालदार हैं और केवल 14 देश हमसे गरीब हैं। सन् 65–66 में हमारा नम्बर 85वां था, अर्थात 84 देश मालदार थे और 40 देश गरीब थे। दस साल के बाद, हम 85वीं पोजीशन से खिसक कर 111 पर आ गए। मतलब यह हुआ कि हमारा देश गरीब ही नहीं है, बल्कि समय बीतते जाने पर और गरीब हो रहा है, गरीबतर हो रहा है, शायद गरीबतम हो जाएगा।

आज हमारे यहां देश में, देश की पूरी आबादी लगायें तो 84 फीसदी आदमी ऐसे हैं जिन्हें स्वस्थ रहने के लिए सूखा अन्न भी नहीं मिलता है, बड़ी–बड़ी गगनचुम्बी इमारतों और आलीशान मकानों के पीछे रहते हैं, सड़क पर चलने वालों को वो गरीब दिखाई नहीं देते हैं।

आज, यह तो ठीक है कि महामारियॉ, मसलन – प्लेग, कॉलरा वगैरा कम हो गए हैं, लेकिन खाना अच्छा न मिलने के कारण, भोजन अच्छा न मिलने के कारण, हम लोगों की ऊंचाई कम होती जा रही है, छाती तंग होती जा रही है, हमारे नौजवानों का वजन कम होता जा रहा है। दूध अंग्रेजों के जमाने में भी हमारे सब बच्चों को नहीं मिलता था, लेकिन तब जितना मिलता था, आज उतना भी नहीं मिलता है, फी–सद।

फिर, दूसरी जो बड़ी बीमारी, यहां दूसरा बड़ा जो दोष है, आज हमारी अर्थ–व्यवस्था का, वो है – अनएम्प्लायमेंट, बेरोजगारी, जो कि बढ़ती जा रही है। केवल मैं आपको शहर के

आंकड़े बता देना चाहता हूं– सन् 1977 में 1 करोड़ 2 लाख 40 हजार आदमियों के नाम दर्ज थे कामदिलाऊ दफ्तरों में, हम लोग काम चाहते हैं, पढ़े–लिखे लड़के और कुछ बेपढ़े भी। अब सितम्बर 79 में, अर्थात् ढाई वर्ष जनता पार्टी के रूल के बाद, हुकूमत के बाद, इन बेरोजगार लोगों की तादाद 1 करोड़ 2 लाख से बढ़कर 1 करोड़ 40 लाख हो गई है।

तीसरी बात यह है, गरीब–अमीर का अंतर बजाय कम होने के बढ़ता जा रहा है। मसलन, अंग्रेजों के जमाने में एक किसान कीए गांव वाले की आमदनी अगर 100 रू0 थी तो शहर वाले की आमदनी 178 थी। लेकिन आज अगर गांव वाले की आमदनी 100 रू0 है तो शहर वाले की आमदनी 346 रू0 है।

गांधीजी सारी उमर हमको यह उपदेश देते रहे कि असली भारत गांवों में रहता है, खेती करता है, इसलिए खेती की तरफ अधिक ध्यान दो। जितनी खेत की पैदावार बढ़ेगी, उतना देश मालदार होगा। उनका दूसरा उपदेश ये था कि अगरचे बड़े–बड़े कारखाने हमको जरूर चाहिये, लेकिन अधिक जोर हमको दस्तकारियों पर, हस्तकलाओं के बढ़ाने पर देना चाहिए –– (शोर).. बड़े कारखानों में अगरचे रूपया बहुत लगता है और कारखानेदारों को मुनाफा बहुत होता है, लेकिन कम लोगों को रोजगार मिलता है।

दूसरी बात मैं आपको किसानों, ये बताना चाहता हूं ... (गुस्से में) कि जिस ये क्या बात हुई है ? ... शोर ...

दूसरी बात, मैं आपको ये बताना चाहता हूं दोस्तों, कि जिस देश में किसानों की तादाद ज्यादा होती है और दूसरा पेशा करने वालों की कम होती है, वो देश गरीब होता है। आज हमारे देश में 72 फीसदी आदमी खेती करता है और 28 फीसदी दूसरा पेशा करता है। इसलिए हमारा देश गरीब है। अमरीका में 100 में 4 आदमी खेती करते हैं, 96 आदमी दूसरा पेशा करते हैं, इसलिए अमरीका के लोग मालदार हैं।

जब अंग्रेज हमारे यहां पर आये थे, तो 60 फीसदी आदमी खेती करता था, 25 फीसदी उद्योग–धंधों में लगा हुआ था, 15 फीसदी तिजारत, और सामान के ढोने में, ट्रांसपोर्ट में लगा हुआ था। लेकिन आज खेती करने वालों की तादाद 60 की बजाय 72 हो गई है। उद्योग–धंधों में लगे हुए लोगों की तादाद 25 से घटकर 10 हो गई, लिहाजा देश आज गरीब हो गया है।

इसलिए खेती के अलावा, हमको दूसरे पेशों में लोगों की तादाद बढ़ानी चाहिए, अगर देश को मालदार बनाना है। लेकिन दूसरे पेशे तब बढ़ते हैं, जब खेत की पैदावार फी–बीघे बढ़ती जाती है। जब खेत की पैदावार बढ़े और किसान बाजार में अपनी पैदावार को बेचे, जितना रुपया उसके पास आएगा, उस रुपये के एवज में वो कोई सामान खरीदना चाहेगा और सामान को पैदा करने के लिए उद्योग–घंधे लगाये जाएंगे।

इसलिए लोकदल और कांग्रेस का जो गठबंधन हुआ है, वो हमारी इस पार्टी की ओर से खेती की पैदावार बढ़ाने पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाएगा। आज केवल 24 प्रतिशत भूमि में सिंचित क्षेत्र है और 76 परसेंट भूमि, 76 प्रतिशत भूमि में कोई सिंचाई का प्रबंध नही है। आप लोगों को इस बात का एहसास नहीं है कि उत्तरी भारत में मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा का भी बहुत बड़ा हिस्सा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हरियाणा वगैरा में आज अनावृष्टि के कारण बिल्कुल सूखा पड़ा हुआ है। अगर हमारे 50 फीसदी रकबे में सिंचाई का प्रबंध होता, तो चाहे सारे देश में एक साल बारिश न हो, तब भी कोई कष्ट हमारे लोगों को नहीं होता।

इसलिए हम बाहर से अन्न मंगाने की बजाय अपने खेतों की पैदावार बढ़ाने के लिए सबसे ज्यादा रुपया सिंचाई के क्षेत्र में लगाएंगे।

आज गांवों में न सड़के हैं, न स्कूल हैं, न अस्पताल हैं और केवल 39 फीसदी गांवों में बिजली की रोशनी है और बाकी 61 गांव, 61 फीसदी गांव रोशनी जानते नहीं हैं कि बिजली की रोशनी भी किसको कहते हैं। लेकिन ये सब तभी होगा, जबकि गांव के लड़के उठकर, गरीब घरों में पैदा हुए, पढ़े–लिखे लड़के, बढ़कर आगे राजनैतिक संगठन करके दिल्ली के तख्त पर कब्जा कर लेंगे, तभी जाके गरीबी मिटेगी, वरना मिटने वाली नहीं है। जो शहरों में हमारे लीडर पैदा हुए हैं वो नेकनीयत हैं, देश के लिए उन्होंने कुरबानी दी है, वो देश को बड़ा बनाना चाहते हैं, लेकिन देश गांवों मे रहता है और उन्हें गांवों की समस्याओं का कोई ज्ञान नहीं है।

अगर आज हम गांव के लिए कोई भी कदम उठाते हैं –– जैसे, वित्त मंत्री की हैसियत से हमने कुछ सहूलियत किसानों को पहुंचाई थी, तो जितने अखबार हैं वो करीब–करीब सब सेठों की मिलकियत के अखबार हैं। उन सबने हमारे खिलाफ बहुत जबरदस्त प्रोपेगेंडा किया, झूठा। बस, एक बात तो है, वो मुझको में, छिपा हुआ नहीं है, आपके सामने आता होगा। अदालतों में जो वो कर रहा है। झूठ बोलने में उनको कोई हिचकिचाहट नहीं है। वो यह कह रही हैं कि मुसलमानों का कत्ले–आम हुआ है अभी दो साल के अन्दर, जबकि वाकया यह है कि उनके जमाने में कहीं ज्यादा बलबे हुए थे, बनिस्बत जनता पार्टी या हमारे जमाने के।

और, जो उनके दिल में आग लगी हुई है फिर प्राइम मिनिस्टर बनने की, अगरचे 11 साल रह चुकी हैं, तो हर हद तक उस आग को बुझाने के लिए सब–कुछ करने को तैयार हैं, यहां तक कि उन्होंने अपने देश पर ये झूठा इल्जाम लगा दिया कि हमारे वैदेशिक मंत्री ने पाक के राष्ट्रपति से, पाकिस्तान के राष्ट्रपति से ये बात तय कर ली है कि वो हमारे मुल्क पर हमला करेगा और हम अपने इलेक्शन को टाल देंगे दो महीने के लिए। हमारे डिफेंस मिनिस्टर श्री सुब्रहमण्यम ने मुझको परसों सबेरे ये बतलाया था कि एक विदेश का कोरॅसपोंडेंट, पत्रकार उनके पास आया और उनसे ये पूंछा क्या आपने फौज वाले लोगों की छुट्टियां कैंसिल कर दी हैं? और रिजर्विस्ट लोगों को बुला लिया है? रक्षा मंत्री जी ने उस कोरॅसपोंडेंट से ये पूछा कि ये बिल्कुल बेसिर–पैर की बात है, आपको किसने ये झूठी बात बतलाई है? तो उस कोरॅसपोंडेंट ने कहा कि मुझको पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा ने यह कहा है।

एक बात आप और नोट करेंगे दोस्तों, कि आज तक इंदिरा गांधी ने कोई अफसोस जाहिर नहीं किया है कि उसने इमरजेंसी लगाई थी और पाप किया था, देश के साथ। वो ये कहती हैं कि उन्होंने बिल्कुल सही किया था। और दोस्तों, अगर आपने गलती से फिर उनको प्राइम मिनिस्टर बना दिया, तो फिर वही करेंगी जो कि उन्होंने पहले किया था, याद रखो।

मैं अपने बयान में यह कह चुका हूं, श्री जगजीवन राम को कि वह 'हिन्दुस्तान के सबसे मालदार राजनैतिक नेता' हैं। इससे ज्यादा मैंने नहीं कहा। लेकिन इसकी उन्होंने तरदीद नहीं की है। क्यों नहीं की है? उनके जाके झुग्गी, झोपड़ी के आगे जाके देखो कितने महल बने हुए हैं दुमंजिले और कितने और महल बने हुए हैं।

जहां तक उनके नेता, जो हमारे प्रधानमंत्री रहे हैं, मैंने यह सारी कहानी आपको बतलाई नहीं है, केवल मैंने उनको प्रधानमंत्री बनवाया था। अब प्रधानमंत्री बनने के बाद उनको

नशा हो गया और जो उनके लड़के के खिलाफ शिकायत थी, मैंने केवल ये कहा था उसको कमीशन आफ इंक्वायरी बैठाओ, जिससे कि वो मुझसे नाराज हो गए थे। 15 जनवरी, सन् 78 को गुजरात के प्रदेश में भावनगर शहर में मीटिंग में उन्होंने खुद ये कहा था कि मेरे लड़के के खिलाफ तरह–तरह के आरोप अखबारों में छप रहे हैं, मैं इस बात के लिए तैयार हूं कि कमीशन बैठाया जाए। लेकिन दो महीने तक जब कमीशन नहीं बठाया तो मैंने उनको चिट्ठी लिखी 11 मार्च को कि आप कमीशन बैठाइए। लेकिन उन्होंने मुझको ये जवाब दिया कि आरोप तो ऐसे लगते ही रहते हैं बेबुनियाद। मेरे पास तो तुम्हारी घरवाली की भी शिकायत आई है। मैंने ये कहा कि अपने लड़के पर कमीशन बाद में बैठाना तुम, मैं इस बात के लिए तैयार हूं कि मेरी वाइफ के और मेरे रिश्तेदारों के खिलाफ कमीशन बैठाओ, अगर कोई बेईमानी की बात उनकी साबित हो जाए और मेरे जरिये कोई बेईमानी उन्होंने की हो।

अभी कुछ दिन हुए बालासुब्रहमण्यम् नाम के एक बिजनेसमैन के यहां, जबकि मैं फाइनेंस मिनिस्टर था, तो मेरे बिना इल्म के और अधिकार था अफसरों को ऐसा करने का, उन्होंने बालासुब्रहमण्यम के घर पर छापा डाला था। बालासुब्रहमण्य ने अदालत में ये एफिडेविट दिया, बयान–हल्फी दिया है कि मैं कांति देसाई के, मोरारजी देसाई के यहां जाता था और कांति देसाई के साथ मैं बिजनेस करता हूं। और, जब मोरारजी बाहर जाते हैं तो उनके साथ मैं विदेशों में जाता हूं।

कर्नाटक के दोस्तों, एक बात कहकर खत्म करना चाहता हूं। मेरा ये विश्वास है, गांधीजी का यह मत था कि आदमी की जिंदगी के दो हिस्से नहीं होते– एक प्राइवेट जीवन और एक पब्लिक जीवन। अगर प्राइवेट जीवन किसी आदमी का अच्छा नहीं होगा और वह लीडर हो जाएगा, कोई पब्लिक की जिम्मेदारी उस पर आएगी तो वो उसमें भी ईमानदार नहीं रहेगा।